IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# मध्यकालीन भारत में नगरीकरण

डा0 राजु कुमार
एम0ए0 पीएच0डी0
पुलिस कॉलोनी, अनिशाबाद, पटना

मुगलकालीन नगरों पर हमें बहुतायत में उपलब्ध यूरोपीय अध्ययन मध्यकालीन नगरों को अधिकांशतः यूरोपीय दृष्टिकोण से देखते हैं – इसके मुख्य राजधानी नगरों को अक्सर 'शिविर शहरों' की संज्ञा दी जाती है। मैक्स वेबर 'पश्चिम' और 'पूर्व' के नगरों के बीच अंतर करता है। वेबर द्वारा 'पूर्वी' नगरों को शाही महल के विस्तार के रूप में देखा गया। संरक्षक. संरक्षित संबंधों की वेबर की अवधारणा को अक्सर साम्राज्य का अवलोकन 'पितृसत्तात्मक.नौकरशाही' के रूप में करने के लिए परिणित किया जाता है और इसके राजधानी नगरों ने संरक्षक (सम्राट).संरक्षित (प्रजा) संबंधों पर आधारित 'पितृसत्तात्मक नौकरशाही नगरों' को सन्निहित किया है। पैरी एंडरसन के अनुसार भी एशियाई नगर राजकुमारों की 'इच्छा' और 'शक्तियों' के अधीन थे । मध्यकालीन नगरों की 'जीवंतता' की अनदेखी करते हुए अक्सर इन अध्ययनों ने मध्ययुगीन समाज को 'एक गतिहीन समाज' के रूप में पेश किया है। मुगल साम्राज्य में व्याप्त अमन और शांति ने शहरीकरण में त्वरित वृद्धि की। मौद्रीकरण के उच्च स्तर, मुगल सत्ता के केंद्रीकरण, सड़क और संचार नेटवर्क को मजबूत करने की प्रक्रिया जिसे शेरशाह सूरी ने प्रारंभ किया और वह सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान और आगे बढ़ी जिसके कारण यातायात और भी आसान और आरामदायक हो गया जिससे व्यापार और वाणिज्य को काफी बढ़ावा मिला और नगरीकरण की प्रक्रिया को भी काफी प्रोत्साहन मिला। टैवर्नियर की टिप्पणी कि 'भारत में एक गांव वास्तव में बहुत छोटा माना जाता है यदि उस गांव में रुपए.पैसों का लेन.देन करने वाला कोई सर्राफ न हो जो पैसे में प्रेषण करने और विनिमय पत्र जारी करने के लिए एक बैंकर की तरह कार्य करता था', स्पष्ट करता है कि मुगलकालीन भारत में मौद्रीकरण उच्च स्तर का था।

सत्रहवीं शताब्दी के तृतीयांश तक लगभग समूचा दक्कन मुगल शासन के प्रभाव में आ गया। बीदर, बीजापुर, गोलकुंडा, बुरहानपुर जैसे नगर प्रमुख नगरीय केंद्रों के रूप में उभरे जहां मुगलों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। हालांकि, विशिष्ट मुगल प्रभाव के बावजूद दक्कन के शहरों ने अपनी देशज संस्कृति को नहीं छोड़ा और उसका समन्वय किया जिसकी झलक इन नगरों की बनावट और नगरीय संस्कृति में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि नगर व्यापक रूप से दो प्रभागों – *अशराफ* और *अजलाफ* में बंटा हुआ था। इसके बावजूद, मध्यम वर्ग की एक मजबूत उपस्थिति थी। नगरों में कट्टर सांस्कृतिक लोकाचार के साथ धार्मिक और जातिगत विभाजन के बावजूद, नगर परासांस्कृतिक लोकाचार के साथ उभरे और विभिन्न जातिगत और धार्मिक परंपराओं को आत्मसात किया। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्सव और समारोह एक सामान्य विरासत थी। प्रतिष्ठा अत्यधिक महत्वपूर्ण थी जो अक्सर संघर्षों का कारण होती थी, लेकिन 'सांप्रदायिक' संघर्ष कभी भी सांस्कृतिक लोकाचार का हिस्सा नहीं थे; यह एक ऐसा लक्षण था जो औपनिवेशिक विरासत के रूप में प्रमुखता से उभरा। इसका उद्देश्य विशिष्ट नगरों पर बुनियादी तौर पर ध्यान केंद्रित करना है, मुख्यतः यह देखने के लिए कि इन विशिष्ट केंद्रों पर मुगल नगरों की व्यापक विशेषताएं कहां तक स्पष्ट थीं। इससे यह आसानी से ज्ञात होगा कि इस तरह के लक्षण व्यापक थे और अक्सर परस्पर.व्याप्त थे।

**शक्ति और सत्ता के केंद्रों के रूप में नगरः**

कैथरीन एशर के अनुसार शाही महलों के निर्माण स्थल का चयन कुछ हद तक नियंत्रण के रूपकों को चिह्नित करता है। बाबर द्वारा अपनी जीत के स्थल पर आगरा में अपने उद्यान.निवास का चयन शहिंदुस्तान को अपने कब्जे में करने और अपने अनुसार ढालने की उसकी अपनी क्षमता का प्रतीकस्वरूप थाश। इसी प्रकार, हुमायूं द्वारा पांडवों की पौराणिक राजधानी इंद्रप्रस्थ की जगह पर दीनपनाह का निर्माण करने का निर्णय एक प्राचीन पूर्व.इस्लामी अतीत से संबंध स्थापित करना था। अकबर द्वारा इलाहाबाद में किले का निर्माण पूर्व परंपराओं पर मुगलों के अधिकार का स्पष्ट प्रतीक था, और साथ ही यह अतीत से जुड़ने का एक जरिया भी था। ऐबा कॉक के अनुसार, शाहजहां के काल में शाहजहां के दिल्ली के राजप्रासाद के जन सभागार में झरोखों के आलंब दंड और बंगला छत, सुलेमानी कल्पना का जागरूक प्रक्षेपण है'। प्राच्यवादी यह तर्क देते हैं कि एशियाई इस्लामी शहरों का अस्तित्व राजा की शक्ति और सत्ता पर आधिपत्य था। पेरी एंडरसन के अनुसार, 'इस्लामी शहरों का भविष्य आम तौर पर राज्य के द्वारा निर्धारित किया जाता था जिसमें उनकी समृद्धि की झलक हो' (चेनोय, 2015: 4 में उद्धृत)। मुगलों द्वारा निर्मित राजधानी नगरों में उनकी भव्यता, शक्ति और सत्ता की नाटकीय अभिव्यक्ति परिलक्षित होती थी। चांदनी चौक, इस्फहान के चहारबाग के सदृश्य और साथ ही शाहजहांबाद की जामा मस्जिद को *'सफाविद मस्जिद.ए शाह'* से श्रेष्ठ बनाने की कोशिश की गई। राजधानी शहर के निर्माण में राजसी जुलूसों का 'वैभव', 'कौतुकतापूर्ण प्रदर्शन' और 'सार्वजनिक ठाट.बाट' के प्रदर्शन की योजना का विचार निहित था। 'राजप्रासाद' एक 'मंच' और 'रंगमहल' की भूमिका निभाता था जिसके चारों ओर राजनीतिक, सांस्कृतिक, वाणिज्यिक और धार्मिक वैभव, उत्सव और संस्थाओं की 'आभा' प्रवाहित होती थी। 'यह नाटक के भीतर एक नाटक की तरह था ... जिसमें दरबारियों के बीच एक झूठा शिष्टाचार का संबंध था जो कि सच्चा प्रतीत होता था'। मुगल शहरों ने 'सम्राट की दिव्यता का प्रदर्शन किया और उसका जश्न मनाया'। शाही उत्सव, धार्मिक समारोह, जन्म और मृत्यु के समारोह, सगाई समारोह इत्यादि 'शक्ति तथा वैभव के आडंबरपूर्ण प्रदर्शन' प्रतीत होते थे जिसमें 'प्रतीकात्मक रूप से पूरे नगर को विनियोजित' किया जाता था। प्रांतीय गवर्नरों की उपसाम्राज्यीय संरचनाएं, प्रांतीय और स्थानीय स्तरों पर समान रूप से शक्ति और सत्ता के आडंबरपूर्ण प्रदर्शन को प्रदर्शित करती थी।

**पितृसत्तात्मक.नौकरशाही नगरः**

ब्लेक इस अवधारणा से प्रारंभ करते हैं कि सार्वभौम एशियाई नगरों और पश्चिम के नगरों के चरित्रों में अंतर था। ब्लेक ने मुगल साम्राज्य को 'पितृसत्तात्मक. नौकरशाही' की तरह और राजसी शहर को सम्राट के साथ 'निजी संबंधों' से बंधे शाही महल के विस्तार के रूप में प्रदर्शित किया है, जिनका संबंध एक पिता और पुत्र की तरह का था। यहां तक कि सभी प्रकार के उत्पादन और विनिमय संबंधों, उपभोग के तरीकों और नगर में सामाजिक संपर्कों में भी शाही परिवार और कुलीन जनों की जीवन शैली की झलक दिखती थी; संस्कृति के क्षेत्र में भी 'दरबारी संस्कृति' का ही प्रभुत्व था। राजा और कुलीन जनों का शहरी परिदृश्य पर काफी प्रभाव था। पश्चिमी शहरों के विपरीत यहाँ स्वयंसेवी नगरपालिका का कोई अस्तित्व नहीं था और न ही एक समूह के रूप में नगर में रहने वालों के बीच वर्ग चेतना ही थी। ब्लेक का तर्क है कि, 'एक सार्वभौम नगर के रूप में, शाहजहानाबाद को मुगल साम्राज्य के पितृसत्तात्मक नौकरशाही चरित्र के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। नगर विशिष्ट रूप से राज्य के साथ संबंधित था, और यह राज्य का व्यक्तिगत, कुटुम्ब. उन्मुख चरित्र था जो शहरी विन्यास तथा शैली को निर्धारित करता था ... नगर में शाही भवनों का बोलबाला था ...

शाहजहानाबाद, राज्य के पितृसत्तात्मक.नौकरशाही परिसर का शहरी निचोड़ था और शहरों के आवासों में राजकीय भवनों की झलक दिखती थी।' हालांकि कियो इजुका, ब्लेक की थीसिस पर सीधे तौर पर चर्चा नहीं करते हैं, लेकिन शाहजहानाबाद के शहरीकरण की चर्चा करते हुए इस बात पर जोर अवश्य डालते हैं कि 'सम्राट की बुनियादी जरूरतों और विचारों के मुतबिक ही शहरी रूपों तथा स्वरूपों का विकास हुआ जिसमें सामाजिक योजनाओं को खास तवज्जो नहीं दी गई'। इस प्रकार नगर, सम्राट और उनके कुलीन जनों के क्रियाकलापों से ज्यादा प्रभवित रहा। परंतु, शहर के बारे में लिखते हुए अबुल फजल शहरों के राजशाही प्रभाव को पूरी तरह से नजरअंदाज करता है। इसके बजाय, उसका तर्क है कि, 'एक शहर को ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जहां विभिन्न प्रकार के शिल्पकार निवास करते हैं'। अगर शाहजहानाबाद नगर की बनावट को गौर से देखा जाए, तो हम पाएंगे कि बाजारों की चहल.पहल की मौजूदगी के अतिरिक्त पेशेवरों, व्यापारियों और कलाकारों के लिए अलग.अलग परिक्षेत्रों का निर्माण किया गया था। चेनाय ब्लेक की आलोचना करते हुए तर्क देती हैं कि, 'सिर्फ पितृसत्तात्मक.नौकरशाही साम्राज्य की सोच ही शहर के निर्माण में परिलक्षित नहीं होती। शाहजहानाबाद शहर, महल प्रासाद, कुछ हवलियों, झोपड़ियों के समूहों, मस्जिदों और कुछ बड़े बाजार तक ही सीमित नहीं था। बल्कि मध्यम आय वर्ग वाले लोग भी यहाँ अधिक संख्या में रहा करते थे जैसे पेशेवर, समृद्ध और छोटे व्यापारी और निम्न श्रेणी के मनसबदार, आदि ...

**शिविर नगरः**

17वीं शताब्दी के विदेशी यात्री फ्रेंकोइस बर्नीयर ने यह टिप्पणी की थी कि भारतीय नगर मात्र 'शिविर नगर' थे। हालंकि इसमें कोई शक नहीं था कि मुगल दरबारों में 'असाधारण गतिशीलता' व्याप्त थी तथा वे राजप्रासादों की प्रतिकृति थे और ऐसा लगता था मानो पूरा नगर ही चल रहा हो। फादर मॉन्सरेट (1590) ने उल्लेख किया है कि अकबर के शिविर की लंबाई तकरीबन 2.5 किलोमीटर के आसपास हुआ करती थी, साथ ही उनके सभी अनुचर, मंत्री और नौकर.चाकर भी साथ.साथ ही चला करते थे। बर्नीयर के विचारों को आधार मानकर कार्ल मार्क्स ने भी यह दोहराया कि शहरी विकास की गति कम होने का मुख्य कारण यह था कि भारत के नगर केवल सैन्य शिविर थे। इस तथ्य से बिल्कुल इनकार नहीं किया जा सकता कि शिविर के आसपास के क्षेत्रों में वाणिज्यिक गतिशीलता आ जाती थी। लेकिन यह कहना कि मुगल शहरों में सम्राट के बिना कोई स्वतंत्र वाणिज्यिक व्यवहार्यता नहीं थी और वहां बाजारों के लिए कोई स्वतंत्र स्थान उपलब्ध नहीं कराए जाते थे, इस तर्क को बेवजह तूल दिया गया लगता है। आगरा, फतहपुर सीकरी और शाहजहानाबाद जैसे राजधानी नगर जीवंत वाणिज्यिक केंद्र थे। शाहजहानाबाद में प्रमुख बाजारों की दो श्रृंखलाएँ थीं – फैज बाजार, उर्दू बाजार और फतहपुरी बाजार। चांदनी चौक में हर तरफ दुकानें थीं। बर्नीयर ने दिल्ली के बाजारों और वहां बिकने वाली वस्तुओं की अत्यधिक प्रशंसा की है। सादुल्लाह खान चौक बाजार की प्रशंसा करते हुए बर्नीयर लिखता है, 'यहां भी नाना प्रकार की चीजों का बाजार लगता है' जो ... सभी प्रकार के नीमहकीम और बाजीगरों के लिए एक समागम स्थल है। सीकरी में व्यापारियों और पेशेवर वर्गों के निवास स्थान आस.पास हुआ करते थे, जो इस बात के परिचायक थे कि 'राजनीतिज्ञों और व्यापारियों के बीच घनिष्ठ संबंध थे। उस वक्त भी जब फतहपुर सीकरी मुगल राजधानी शहर था, 1581 में हाकिम अबुल फतह गिलानी और 1584 में राल्फ फिच द्वारा फतहपुर का उल्लेख एक जीवंत वाणिज्यिक केंद्र के रूप में किया गया था; बाद में लगभग तीस साल बाद विलियम फिंच जहां, यहाँ के महल और अन्य मकानों की उजाड़ स्थिति का उल्लेख करता है वहीं वह इसे नील उत्पादन के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में वर्णित करता है। पेल्सर्ट, जो जहांगीर के शासनकाल में आगरा आया था, यह वह वक्त था जब सिकंदरा को राजधानी शहर के रूप में मुगलों द्वारा काफी पहले (1586) त्याग दिया गया था, इसके वाणिज्यिक महत्व की काफी प्रशंसा करता है।

**गतिशील शहरः**

मोहम्मद घारिपोर और मनु पी. सोबती ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि आमतौर पर 'शहर रूपी' मोबाइल टेंट (गतिशील शिविर) इस्लामिक शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। उनका तर्क है कि 'इस्लामी बस्तियों में एक असामान्य दोहरापन था – ये एक जगह स्थिर भी होते थे और साथ ही खानाबदोश की तरह चलायमान भी थे'। इस 'सांस्कृतिक दोहरेपन' ने 'तंबू और महल के बीच के संबंध को प्रगाढ़' बनाया। उनका तर्क है कि 'प्रारंभिक इस्लामी शहरों का निर्माण प्रवासी जनसंख्या द्वारा किया गया ... जिसके कारण इन असमान वातावरणों में न सिर्फ शहरीपन का विशेष चरित्र था, बल्कि इसमें शहरी और उप नगरीय जिलों का भी निर्माण हुआ।

शाही शिविर, इस्लामी शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। यहां तक कि बाबर ने भी कभी किसी भी महल परिसर की स्थापनाध्निर्माण नहीं किया बल्कि खुले में ही रहा करता था, इसीलिए उसने आगरा में उद्यान परिसरों की स्थापना की, जहाँ वह अक्सर अपने *बाग.ए हश्त बिहिश्त* में रहता था। अकबर द्वारा आगरा के किले और फतहपुर सीकरी के निर्माण की योजना मुख्य रूप से शाही 'शिविरों' पर आधारित थी, बल्कि अकबर के राजधानी नगर सीकरी की योजना 'चलायमान गतिशील शिविर नगरों' पर
आधारित थी। अपनी स्थिति को मजबूत बनाए रखने, आंतरिक विद्रोहों को दबाए रखने और बाह्य खतरों का सामना करने के लिए मुगल सम्राटों को हर समय एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर चलायमान रहना पड़ता था और इसीलिए वे इन गतिशील शिविरों को अपने 'चलायमान महलों' के रूप में इस्तेमाल किया करते थे।

**ग्रामीण.शहरी नैरंतर्यरू कस्बाः**

यूरोपीय यात्रियों द्वारा मुगल शहरों को अक्सर गांवों के समूह के रूप में वर्णित किया गया है। पेल्सर्ट ने आगरा नगर के विकास पर टिप्पणी करते हुए कहा कि 'यह मात्र एक गांव था, जो बयाना के अधिकार क्षेत्र में पड़ता था, जब तक बादशाह अकबर ने 1556 में इसे अपने निवास के लिए नहीं चुना।' इरफान हबीब का तर्क है कि 'भारतीय गांव एक स्थिर आर्थिक इकाई थे, जो अपनी खपत की जरूरतों के लिए अनिवार्य रूप से आत्मनिर्भर थे'। व्यापार एकतरफा – 'गांवों से नगर की ओर था'। नमक और गुड़ तथा कुछ शहरी विलासिता की वस्तुओं, जो गावों में अभिजात्य वर्ग के लोगों के लिए व्यापार के उद्देश्य से भेजे जाते थे, के अतिरिक्त, की मांग गावों में नहीं थी। के. एन. चौधरी ने भी इस बात की पुष्टि की है कि 'व्यापार निश्चित तौर पर एक ही दिशा में होता था'। इस प्रकार, इरफान हबीब और के. एन. चौधरी का मानना है कि मध्ययुगीन शहरों की प्रकृति परजीवी थी। उनके अनुसार, 'ग्रामीण अधिशेष का बड़ा हिस्सा ख्भू.राजस्व के रूप में, एकत्रित किया जाता था, जिससे ग्रामीण बाजार की स्थापना की स्थिति पैदा हुई।' इस प्रकार, 'कृषि क्षेत्र से भारी राजस्व का संग्रह और उसका नियंत्रण एक

छोटे से शासक वर्ग के हाथों में आ गया, इस प्रकार, मुगल काल के दौरान शहरी क्षेत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था का विशेष विस्तार हुआ। हालांकि, चेतन सिंह का तर्क है कि 'सत्रहवीं शताब्दी में शहरों और गांवों के बीच परस्पर सहजीवी संबंध थे'। उनका तर्क है कि मध्ययुगीन पंजाब में शहर प्रायरू समृद्ध कृषि क्षेत्रों में स्थित थे। गांवों से शहरों को खाद्य पदार्थ और कच्चे माल की आपूर्ति की जाती थी, वैसे ही महत्वपूर्ण शहरों पर गांवों की निर्भरता भी थी। अगर कृषि उत्पादों की मांग में कमी आती तो गांवों में भी समान रूप से 'आर्थिक संकट' बढ़ जाता।

**नगरीय परिदृश्यः**

शाही और अभिजात वर्गों द्वारा बनाए गए मुगल शहर आमतौर पर दो प्रकार के होते थे – स्वतरू विकसित शहर और शाही शहर। प्रथम श्रेणी में आमतौर पर बाजार केंद्र, धार्मिक केंद्र या बंदरगाह नगर आते हैंय जबकि दूसरी श्रेणी में राजधानी नगर, प्रशासनिक केंद्र, सीमावर्ती ६ सामरिक नगर इत्यादि आते हैं। के.एन. चौधरी के अनुसार मुगल साम्राज्य में शहरों के पदानुक्रम मौजूद थे। उन्होंने राजधानी शहरों (दिल्ली, आगरा, लाहौर, अहमदाबाद, पटना, बुरहानपुर और उत्तर.पश्चिम के नगर काबुल और कांधार) को मुख्य शहरों के रूप में परिभाषित किया है जिनकी श्रेणीबद्धता राजनीतिक प्रभाव से प्रेरित तथा निर्देशित थी लेकिन इनकी आर्थिक भूमिका भी दूसरे बड़े शहरों से कम नहीं थी।

इस प्रकार चौधरी ने उनके वाणिज्यिक और औद्योगिक महत्व को अपेक्षाकृत नकारा। इसके अलावा ग्वालियर, इलाहाबाद, चुनार, औरंगाबाद और जुनार जैसे शहरों को 'सैन्य नगर' माना जो साम्राज्य को 'सैन्य रूप से सामरिक शक्ति प्रदान करते थे'। राजनीतिक रूप से शासकों से संबंध होने के कारण इन शहरों का भविष्य भी शासकों के भविष्य पर निर्भर करता था, अतरू उनकी प्रकृति अपेक्षाकृत अल्पकालिक थी। विजयनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, पूना जैसे शहरों का अपने संरक्षकों की राजनीतिक शक्ति के पतन के साथ ही उनका भी ह्रास हुआ। हालांकि, पेरी एंडरसन ने सभी इस्लामिक शहरों को शाही शहरों के वर्ग में रखा। उन्होंने तर्क देते हुए कहा कि 'अव्यवस्था में बढ़ोतरी, योजना या चार्टर की कमी के तहत, इस्लामी शहरों का भाग्य आमतौर पर राज्य द्वारा निर्धारित किया जाता था, जिसकी समृद्धि पर उनकी समृद्धि निर्भर करती थी'। लेकिन एंडरसन की अवधारणा मध्यकालीन मुगल शहरों के संदर्भ में सही नहीं ठहरती। शाहजहानाबाद, आगरा, फतेहपुर सीकरी, लाहौर आदि जैसे राजधानी शहर स्पष्ट रूप से योजनाबद्ध तरीके से और शीघ्र ही व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे। हालांकि, इन श्रेणियों में से कोई भी अलग से विकसित नहीं हो सकतीय विशेषताएं एक.दूसरे पर परस्पर व्याप्त हैं। लाहौर एक समय में सामरिक और प्रशासनिक केंद्र था, साथ ही प्रमुख रेशम मार्ग से जुड़ा प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र भी था।

इसी तरह, बनारस मुख्य रूप से एक धार्मिक नगर था, लेकिन फिर भी खासकर रेशम और बेल.बूटेदार जरी (ब्रोकेड) जैसे वस्त्रों के उत्पादन का प्रमुख केंद्र था। इसके बावजूद विशिष्ट उत्पादन शहर भी समृद्ध हुए। बयाना को इसके नील उत्पादन के कारण प्रमुखता मिली, वहीं अवध क्षेत्र में खैराबाद तथा दरियाबाद को वस्त्रों के उत्पादन के कारण प्रसिद्धि मिली।

17वीं शताब्दी में विभिन्न क्षेत्रों और इलाकों में नियुक्त अमीरों तथा जागीरदारों की छत्रछाया में कई शहरों का विकास हुआ। 17वीं शताब्दी के मध्य में पूरे रूहेलखंड क्षेत्र में रोहिल्ला अफगान बस गये, जिसका पूरा श्रेय बहादुर खान को जाता है जिसने करीब 50 रोहिला उप कबीलों को इस क्षेत्र में लाकर बसाया। शाहजहांपुर रोहिल्लाओं के गढ़ के रूप में उभरा। राजकुमार मुराद के नाम पर रुस्तम खान दक्खनी ने इस क्षेत्र में मुरादाबाद शहर की स्थापना की। 1713 में एक अन्य अफगान अमीर मुहम्मद खान बंगश ने फर्रुखाबाद शहर की नींव रखी और वह अपने साथी देशवासियों के साथ यहीं बस गया। इसी प्रकार, इटावा के निकट, यकदिल खान ने यकदिलाबाद की स्थापना की, शुरूआत में 1629–32 के दौरान उन्होंने यहां एक सराय और एक मस्जिद की स्थापना की थी।

**मुगलकालीन नगरों में उद्यान**

उद्यानों की परंपरा मुगलों से पहले से ही विद्यमान थी। लोदी वंश के शासकों ने सबसे पहले उद्यानों का निर्माण कराया। लेकिन, मुगल शासन काल के दौरान ये शहरी स्थानों के प्रमुख केन्द्र बन गये – ये अंतिम निवास स्थान (मुगल कब्र उद्यान) थेय शरण और मनोरंजन के स्थान; उत्सव और अभिनंदन की एक प्रमुख जगह; राजा के राज्यारोहण के साथ.साथ उनके पदच्युत किए जाने के प्रमुख स्थल के रूप में प्रयोग किए जाते थे। हालांकि, उद्यान शासकीय आवासीय परिसरों के साथ. साथ अमीरों के निवास स्थान, जिन्हें *खानाबाग* या *सराय बस्तन* के नाम से जाना जाता था, का भी अभिन्न हिस्सा बन गये जिम वेस्टकोट जूनियर का मानना है कि 'उद्यान में होने वाले कार्यक्रम ज्यादातर राजा की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के प्रतीक बन गए'। 'उद्यान शिकायत, न्याय और सुलह से संबंधित कार्यों के निष्पादन स्थल के रूप में भी कार्य करते थे'।

उद्यान उत्सव और प्रीतिभोज के लिए भी प्रमुख स्थल बन गए। बाबर कहा करता था कि उसकी आत्मा को *बाग.ए जर अफशां* में काफी शांति मिलती थी। इस प्रकार 'मृत्यु के पश्चात् राजा को उद्यान में ही चिरस्थाई शरणस्थल के रूप में विस्थापित किया जाता था'। अपने राजकाल के दौरान राजा इसके विपरीत 'निर्माण, यात्राओं और प्रदर्शन के लिए इनका इस्तेमाल करता'। हुमायूं के नदी के किनारे स्थित उद्यान में चार दो मंजिली इमारतें थीं, जो चार बुर्जों द्वारा एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं, जहां एक महीने लंबे समारोह, संगीत उत्सव, बौद्धिक व्याख्यानों का आयोजन किया जाता था और सम्मान प्रदान करने

के लिए लोगों को उपहार स्वरूप विभिन्न उपाधियां प्रदान की जाती थीं। यमुना में ऐसे अन्य चलायमान चौबारे भी थे।यहां उपलब्ध वस्तुओं की प्रकृति के बारे में ख्वांदमीर लिखता है, 'प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, पेय, पोशाकें, कपड़े, गोला.बारूद और युद्ध के हथियारों इत्यादि जो चाहे वह प्राप्त कर सकता था ...'।

हुमायूं प्रत्येक मंगलवार और रविवार को शाही महिलाओं के साथ नदी किनारे स्थित इन उद्यानों में जाता था। *चहार बाग* में हुमायूं नए साल का जश्न मनाया करता था। अकबर की शुरुआती जिंदगी से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएं भी इन्हीं उद्यानों में हुईं – उसकी खतना की रस्म और कुश्ती प्रतियोगिता में बालक अकबर की जीत काबुल के अवर्ताह या उत्रा बाग में आयोजित हुई थी। इस प्रकार, मुगलों के तहत उद्यान शहरी केंद्रों में जीवंत गतिविधियों के स्थान थे। यूरोपीय यात्रियों ने आगरा नगर को मुगलों के उद्यानों के नगर के रूप में वर्णित किया। राजधानी.नगर फतहपुर सीकरी में कुल उनतीस उद्यान बनाए गए थे। जिसमें से बीस नगर के अंदर, छह प्राचीर के बाहर और तीन महल परिसर के भीतर स्थित थे। हयात बख्श उद्यान शाहजहां के महल का राजकीय उद्यान था जो शाहजहानाबाद में स्थित था। शाहजहां के आनंद जन्य बागों में कश्मीर और लाहौर के शालीमार बाग तथा कश्मीर का निशात बाग प्रमुख हैं। इसी प्रकार, मकबरे के प्रांगणों में स्थित बागों में हुमायूं का मकबरा और ताजमहल प्रमुख हैं। जहांगीर की पत्नी और मान सिंह की बेटी शाह बेगम का मकबरा.बाग, खुसरो बाग, जो इलाहाबाद में स्थित है, एक अन्य प्रमुख उद्यान है। जेम्स डिकी (1985रू 132) मकबरे वाले उद्यान का वर्णन करते हुए लिखता है कि, 'परम आनंद की अनुभूति के लिए उद्यान भौतिक उपभोग की जगह है।' हुमायूं का मकबरा जल्द ही मुगल शासकों का मशहूर गंतव्य स्थल बन गया और वे इस मकबरे पर नियमित रूप से दर्शन के लिए जाया करते थे। ये मकबरे वाले उद्यान आम लोगों के लिए भी उपलब्ध थे।

**सन्दर्भ ग्रंथः**


1. अबुल फजल अल्लामी, (1977) *दि आइन.ए अकबरी,* अनुवाद एच. ब्लॉकमैन, भाग.1, तृतीय संस्करण, (नई दिल्लीरू ओरियण्ट बुक्स रिप्रिंट कॉपरेशन).
2. बर्नियर, फ्रांकायस, (1916) *ट्रैवल्स इन दि मोगल एम्पायर, ए.डी. 1656.1668,* विन्सेन्ट ए. स्मिथ द्वारा संशोधित द्वितीय संस्करण (लंदनरू ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस).
3. चन्द्रा, सतीश, (2005), 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ अर्बनाइजेशन इन मिडिवल इण्डिया' बंगा इन्दू (सं.), *दि सिटी इन इण्डियन हिस्ट्रीरू अर्बन डेमोग्राफी, सोसाइटी एण्ड पॉलिटिक्स* (नई दिल्लीरू मनोहर).
4. देवड़ा, जी.एस.एल., (2014), 'फॉर्मेशन एण्ड ग्रोथ ऑफ मण्डीस एण्ड चौक्स इन वेस्टर्न राजस्थान, ए.डी. 1700.1830', शर्मा, योगेश एवं पायस मालेकन्डाथिल (सं.), *सिटीज इन मिडिवल इण्डिया* (नई दिल्लीरू प्राइमस बुक्स).
5. महमूद, एस. हसन, (2000), *एन एटीन्थ सेन्चूरी अग्रेरियन मैनुअलरू यासिन'स दस्तूर.ए. मालगुजारी* (नई दिल्लीरू किताब भवन).
6. मूसवी, शीरीन, (2015) *दि इकोनॉमी ऑफ दि मुगल एम्पायर, बण्1595रू ए स्टैटिस्टीकल स्टडी* (नई दिल्लीरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).
7. रेजावी, एस. अली नदीम, (2013), *फतहपुर सीकरी रिविजिटेड* (नई दिल्लीरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).
8. सिंह, चेतन, (1991), *रीजन एण्ड एम्पायररू पंजाब इन दि सेवन्टीन्थ सेंचुरी* (दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).
9. सिंह, एम. पी., (1985) *टाउन, मार्केट, मिन्ट एण्ड पोर्ट इन दि मुगल एम्पायर, 1556. 1707: एडमिनिस्ट्रेशन.कम. इकोनॉमिक स्टडी* (नई दिल्लीरू अदम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स).
10. वेस्टकोट, जूनियर, जिम, (1991) 'रिचुअल मूवमेंट एण्ड टेरिटोरियलिटी ड्यूरिंग दि रेन ऑफ हुमायूँ'. *इन्वायरन्मेंटल डिजाइन.*